श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

सितम्बर २००९

वर्ष ८१ | श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर | अंक ९

www.krishnapranami.org

श्री कृष्ण प्राकट्यके अवसर पर मन्दिरमें की गई आरती एवं दर्शनकी झांकी

श्री ५ नवतनपुरी धामके नेतृत्वमें जामनगरके विविध संस्थाओंके सहयोगसे
निकाली गई श्री कृष्ण जन्माष्टमीकी भव्य शोभायात्रा

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

वि.सं : २०६६ निजानन्दाब्द : ४२७ बुद्धजी शाके : ३३२

वर्ष ८१ सितम्बर २००९ अंक ९

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजड़ा मन्दिर जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक (मानद्) : डॉ. प्रवीण चन्द्र परीख

सम्पादक मण्डल : शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य तथा श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/-	१५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१

फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३

E-mail : navtan@sancharnet.in, navtanpuri@gmail.com

website : www.krishnapranami.org/www.krishnadham.org

सद्‌गुरु जयन्ती

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने इस भूतल पर अवतरित होकर एक ओर साधनाका मार्ग सिखाया तो दूसरी ओर व्रजका प्रेम भाव प्रकट किया । उनका हृदय अत्यन्त निर्मल था । स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर उन्हें प्रत्येक्ष दर्शन दिए ऐसे सद्‌गुरुकी जयन्ती आश्विन शुक्ला चतुर्दशी इस वर्ष दिनांक २ अक्तूबर २००९ को आ रही है । दूसरे दिन शरद पूर्णिमा है । इस अवसर पर श्री ५ पद्मावती पुरी में वार्षिक उत्सव मनाया जाता है । सद्‌गुरु जयन्तीमें सुन्दरसाथ अपने घरोंको सजायें जिससे दूसरोंको भी पता चले कि आप सद्‌गुरु जयन्ती मना रहे हैं ।

मेहेर सागर

पूज्य पाद् जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

(गतांक पृष्ठ ९.....से आगे)

श्री राजजीकी कृपा प्राप्त होनेपर अन्य सभी सम्पदायें स्वतः प्राप्त होती हैं। यथा,

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकुम ।
मेहेर रहत नूर बल लिएं, तहाँ हक इसक इलम ॥ २८

जैसे ही श्री राजजीकी कृपा प्राप्त होती है वैसे ही उनका जोश प्राप्त होता है। जैसे ही जोश प्राप्त होता है वैसे ही उनका आदेश भी प्राप्त होता है। श्री राजजीकी कृपामें चिन्मय शक्ति समायी हुई रहती है वहाँ पर प्रेम और ज्ञान भी उपस्थित होते हैं।

ज्यों मेहेर त्यो जोस है.......श्री राजजीकी कृपाका अनुभव करनेवाले व्यक्ति उनके जोशका भी अनुभव करते हैं। जो आत्माएँ जोशसे परिपूर्ण होती हैं उनको प्रत्येक क्षण प्रत्येक वस्तुमें श्री राजजीकी कृपाके ही दर्शन होते हैं। वे सदैव उनके जोशका भी अनुभव करती हैं। श्री राजजीकी चर्चा होनेपर उनके रोम रोम पुलकित हो जाते हैं। ऐसी आत्माएँ ही श्री राजजीके आदेशको भी समझ पाती हैं। उनको ही श्री राजजीके निर्देशनका ख्याल होता है। श्री राजजी अपनी आत्माओंका संरक्षण करते हैं, उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन देते हैं किन्तु जो आत्माएँ श्री राजजीकी कृपाका अनुभव करती हैं वे ही उनके मार्गदर्शनको समझ पाती हैं। जो आत्माएँ श्री राजजीके मार्गदर्शनमें चलती हैं उनको सदैव सफलता प्राप्त होती है।

मेहेर रहत नूर बल लिए.......श्री राजजीकी कृपामें चिन्मय शक्ति रहती है। एक सामान्य अधिकारी यदि किसी कर्मचारी पर कृपा करता है तो उस कर्मचारीको अनुभव होता है कि उसका बल बढ़ गया है। स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा जिस पर कृपा करते हैं तो उस आत्माकी शक्तिमें तो बहुत बड़ी अभिवृद्धि होगी ही। क्योकि श्री राजजजीकी कृपामें चिन्मय शक्ति समायी हुई रहती है। वह लौकिक

या पारलौकिक सभी शक्तियोंसे विशिष्ट है। लौकिक शक्ति प्राप्त होनेपर अहंकार बढ़ जाता है जिससे ज्ञान एवं प्रेम दोनों ही दूर चले जाते हैं। किन्तु अलौकिक शक्ति प्राप्त होनेपर विनम्रता बढ़ जाती है जिससे ज्ञान और प्रेम दोनों पुष्ट हो जाते हैं। श्री राजजीकी कृपामें वह शक्ति विराजमान है जिससे ज्ञान और प्रेम दोनों ही परिपुष्ट हो जाते हैं।

श्री राजजीकी कृपाके सागरमें स्थित मधुर सुखका आस्वादन करवाते हुए कहते हैं,

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इसक हक अंग हैं, मेहेर इसक प्रेम काम ॥ २९

श्री राजजीकी कृपाके सागरमें मधुर सुख हैं। इसी कृपामें पूर्ण विश्रान्ति है। कृपा एवं प्रेम दोनों ही श्री राजजीके अंगमें समाये हुए हैं। इसी कृपासे इश्क अथवा प्रेमकी वृद्धि होती है।

मीठा सुख मेहेर सागर.......श्री राजजीकी कृपा सागरकी भांति अथाह है। उसके दर्शन, स्पर्श, आचमन एवं अवगाहनसे मधुर सुखका अनुभव होता है। जो आत्माएँ ऐसी कृपाके दर्शन मात्र करती हैं उनको भी मधुर सुखका अनुभव होता है किन्तु जो इसका अनुभव करती हैं उनको तो और भी अधिक सुखका अनुभव होगा। जो आत्माएँ इस कृपाका आचमन करती हैं उनको भी अवगाहनका सुख मिलता है तो जो सचमुच अगाहन करती हैं उनको कितना सुख प्राप्त होगा ? इस कृपाके सागरमें डूबने वाले भी जीते हुए ही भवसागर तर जाते हैं। जिन आत्माओने श्री राजजीकी कृपाका अचमन (चख) कर लिया हो उनको अन्यत्र कहीं भी विश्रान्ति नहीं मिलता है क्योंकि श्री राजजीकी कृपामें ही पूर्ण विश्रान्ति है।

मेहेर इसक हक अंग है......कृपा एवं प्रेम दोनों ही श्री राजजीके अंग हैं। जिनपर कृपा होती है उसके हृदयमें अपार प्रेम स्वतः उमड़ जाता है। इसी प्रकार जिसका हृदय प्रेमसे परिपूर्ण है वही आत्मा सर्वत्र कृपाके दर्शन करती है। इस प्रकार कृपा और प्रेम एक दूसरेके पूरक हैं तथापि कृपाको ही सर्वोपरिता प्राप्त है क्योंकि कृपाके द्वारा ही प्रेमकी अभिवृद्धि होती है जिससे श्री राजजीके मिलनकी उत्कंठा उत्पन्न होती है। सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करवानेवाली श्री राजजीकी कृपा सागरसे भी बढ़कर असीम और अपरिमेय है।

कृपाकी क्षमताका परिचय करवाते हुए कहते हैं,

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताय देत आप माफक ।। ३०

इस कृपाके कार्य ही अति महान हैं क्योंकि यह कृपा अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी है । जिनके ऊपर यह कृपा होती है श्री राजजी उसे अपनी इच्छाके अनुरूप प्रदान करते हैं ।

काम बड़े इन मेहेर के......श्री राजजीकी कृपाके कार्य महान होते हैं । क्योंकि यह कृपा स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माकी है । जो विश्व ब्रह्माण्डके स्वामियोंके भी स्वामी हैं ऐसे पूर्णब्रह्म परमात्माकी कृपाकी क्षमता सामान्य कैसे होगी । स्वर्गमें रहनेवाले देवी-देवतायें भी कृपा कर स्वर्गलोक, पितृलोक एवं मृत्युलोकके सुख प्रदान कर सकते हैं । इसी प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरकी कृपा चौदह लोंकोंका सुख प्रदान कर सकती है । उससे बढ़कर पूर्णब्रह्म परमात्माकी कृपा तो यहाँसे लेकर परमधाम पर्यन्तके सुख प्रदान करती है । इसलिए इस कृपाके कार्य अत्यन्त महान हैं ।

मेहेर होत जिन ऊपर.....जिन आत्माओं पर श्री राजजी कृपा करते हैं उनको वे अपनी इच्छाके अनुरूप अपार सुख प्रदान करते हैं । सामान्य व्यक्ति भी किसी पर प्रसन्न होता है तो अपनी इच्छाके अनुरूप वस्तु या धन प्रदान करता है । वह व्यक्ति जितना महान होगा उसीके अनुरूप उसकी कृपा भी महान कृपा होगी । जबकि श्री राजजी तो पूर्ण ब्रह्म परमात्मा हैं वे किसीको कुछ देते हैं तो अपने अनुरूप महान कृपा करते हैं । उन्होंने अक्षर ब्रह्मको परमधामकी लीला दिखानेके लिए नश्वर जगतकी रचना करवा कर उसमें रासकी लीला की । इसी प्रकार उन्होंने अपनी आत्माओंको अक्षरब्रह्मका खेल दिखाया तो सभीको मूलमिलावामें बुलाकर अपने चरणों तले बैठाया । यह सब श्री राजजीकी महती कृपा है । वे अनहोनीको भी होनी बना देते हैं । ब्रह्मके लिए कहा गया है कि वह कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं समर्थः अर्थात् वह कुछ भी करनेके लिए समर्थ है । श्री राजजी स्वयं पूर्णब्रह्म हैं । इसलिए वे सर्व समर्थ हैं ।

श्री राजजीकी कृपासे ही नश्वर जगतका खेल बना है, वह भी ब्रह्मात्माओंके लिए । इस बातकी स्पष्टता कर रहे हैं,

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन ।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेरें फिरस्तन ।। ३१

श्री राजजीकी असीम कृपासे ही ब्रह्मात्माओंको दिखनेके लिए नश्वर जगतरूप नाटककी रचना हुई और इसमें ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरी सृष्टिका अवतरण सुरताके रूपमें हुआ ।

मेहेरें खेल बनाइया........श्री राजजीने अपनी आत्माओंको अपने परम कृपाका अनुभव करवानेके लिए ही नश्वर जगतका खेल बनाया है । ब्रह्मधाम परमधाममें सदैव श्री राजजीके सान्निध्यमें रहकर उनके प्रेममें मस्त बनी हुई ब्रह्मात्माओंको अपनी कृपाका अधिक अनुभव करवानेके लिए ही श्री राजजीनी नश्वर जगतकी रचना करवायी । अक्षरब्रह्म जगतके सूत्रधार हैं । वे सदैव नश्वर ब्रह्माण्डोंको बनाते हैं, टिकाते हैं और मिटाते हैं । सर्जन विसर्जनकी लीला करते रहनेके कारण उनको बाल स्वभाववाले माना गया हैं । उनका स्वरूप तो किशोर ही है, लीलामात्र बाल चरित्र है । श्री राजजीने जब ब्रह्मात्माओंको अक्षरब्रह्मका खेल दिखानेका निश्चय किया तब उनको आज्ञा दी कि ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए खेलकी रचना करो । श्री राजजीकी आज्ञाके अनुसार अक्षरब्रह्मने इस रचनामें अनेक विशेषतायें रख दी जिससे नश्वर जगतमें भी अखण्ड लीला हो सकी । यह सारी व्यवस्था ब्रह्मात्माओंके लिए हुई है । श्री राजजीने कृपा करके ही यह व्यवस्था करवायी है ।

मेहेरें मिलावा हुआ.......श्री राजजीने अपनी कृपाके द्वारा ही ब्रह्मात्माओंकी सुरताको नश्वर जगतमें अवतरित किया । मूलतः उन्होंने ब्रह्मात्माओंको मूलमिलावामें अपने चरणों तले बैठाया और उनकी सुरता (मनोवृत्ति)को नश्वर जगतमें भेजा । इसी सुरताने जगतमें आकर नश्वर तन धारण किए हैं । श्री राजजीकी कृपाने ही ब्रह्मात्माओंकी सेवाके लिए ईश्वरीय सृष्टिको भी जगतमें अवतरित किया । अन्यथा नश्वर जगतमें माया मोहके जालमें फँसे हुए जगतके जीवोंको अखंड परमधाम एवं पूर्णब्रह्मके विषयमें विश्वास ही कैसे होता । वे ईश्वरीय सृष्टिके विश्वासको देखकर धीरे धीरे परमात्माकी शरणमें आयेंगे ।

श्री राजजीकी कृपाने ही परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी साक्षी दिलानेके लिए समय समय पर सन्देशवाहकोंको भेजा जो जगतमें भिन्न भिन्न नामोंसे परिचित हुए । यथा,

मेहेरें रसूल होय आइयां, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥ ३२

श्री राजजीकी कृपासे ही उनका सन्देह लेकर रसूल मुहम्मद इस जगतमें आए। सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज भी उन्हींकी कृपासे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर आए और उन्होंने पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान करवायी ।

मेहेरें रसूल होय आइयां.......श्री राजजीने समय समय पर सन्देशवाहकोंको भेजकर अपना सन्देश नश्वर जगतमें भेजा। इसी श्रृंखलामें रसूल मुहम्मद भी आए और उन्होंने पूर्णब्रह्म परमात्माके एक होने की बात कही। भारतमें अवतरित धर्मग्रन्थोंमें तो पहलेसे ही एक परमात्माकी बात की गई है किन्तु दूसरे स्थानोंमें आनेवाले महापुरुष भी जब ऐसी बातकी पुष्टि करते हैं तब परमात्माके एक होनेमें कोई सन्देह नहीं रहता। इस प्रकार अनेक महापुरुषोंका अवतरण इस जगत पर हुआ जिन्होंने परमात्माके एक होनेकी बात कही हैं। किन्तु भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न-भिन्न समय पर अवतरित होनेके कारण उन महापुरुषोंके सन्देशमें देश, काल और परिस्थितिका प्रभाव रहा। जिससे सामान्य जन यह समझ नहीं पाए कि ये सभी महापुरुष एक परमात्माकी बात करते हैं तो वे उनके अपने-अपने हैं या सभीके मिलाकर एक हैं ? इसलिए इस सन्देहको मिटाना आवश्यक हो गया। ऐसेमें निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजका अवतरण हुआ। पूर्णब्रह्म परमात्माने उनको तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर भेजा और कहा कि इसके द्वारा सभी धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट करना और उनमें वर्णित एक परमात्माकी यथार्थ पहचान करवाना। इस प्रकार श्री देवचन्द्रजी महाराजने जगतमें आकर उन्हीं परमात्माकी असीम कृपासे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीके द्वारा सभी धर्मग्रन्थोंका रहस्य स्पष्ट कर पूर्णब्रह्म परमात्माकी यथार्थ पहचान करवायी। यथा,

कुञ्जी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥ ३२

दै मेहेरें कुञ्जी इमाम को, तीनों महम्मद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत ॥ ३३

श्री राजजीकी कृपाके कारण ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने मुझे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की जिससे मैंने रसूल मुहममद द्वारा निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंका रहस्य स्पष्ट किया। इसी कृपाने मुझे शक्ति प्रदान की जिससे मैंने

परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दी ।

दै मेहेरें कुञ्जी इमामको.......श्री राजजीकी असीम कृपा ही इस जगतमें विशिष्ट कार्य करती है। सर्वप्रथम उसने सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजको तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान की जिससे सद्‌गुरुने सभी शास्त्रोंका रहस्य स्पष्ट कर दिया तदनन्तर सद्‌गुरुके द्वारा यह कुञ्जी श्री प्राणनाथजी (इमाम महदी)को प्रदान करवायी जिससे उन्होंने रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट तीनों स्वरूपों–बसरी, मलकी और हकीका रहस्य स्पष्ट कर दिया। रसूल मुहम्मदने परमात्माका सन्देश देनेवाली परमात्माद्वारा प्रशंसित आत्मा (मुहम्मद)के तीन स्वरूपोंकी चर्चा की थी। महामतिने उसका रहस्य स्पष्ट कर दिया कि बसरामें प्रकट हुई शक्ति बसरी रसूल मुहम्मदमें थी जिसने एक मात्र परमात्मा पूजनीय हैं ऐसी बात कही। सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीने तारतम ज्ञानके द्वारा सभी शास्त्रोंका रहस्य स्पष्ट कर उन सभीमें एक ही परमात्मा तथा उनके धाम परम धामकी चर्चा की गई है यह बात स्पष्ट कर दी। परमधामकी अपार सम्पदायको प्रकट करनेकी शक्ति उनमें होनेसे परमात्मा द्वारा प्रशंसित आत्माका दूसरा स्वरूप उनमें था तथा परमधामकी यथार्थता स्पष्ट करनेकी क्षमता मुझमें होनेसे उक्त आत्माका तीसरा स्वरूपमें मुझमें स्थित है यह बात महामतिने स्पष्ट कर दी ।

मेहेरें दई हिकमत........श्री राजजीकी असीम कृपाने ही महामतिको वह शक्ति प्रदान की जिससे उन्होंने परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दी। महामतिने कुंभ पर्व पर हरिद्वारमें सभी धर्मचार्योंको परमात्मा एवं परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दी जिससे उन्होंने महामतिको विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलंक अवतारके रूपमें स्वीकार किया ।

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखरत ।
मेहेरें समझे मोमन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ।। ३४ ।।

श्री राजजीकी कृपाके द्वारा ही कुरानके गूढ रहस्य स्पष्ट किए एवं उसमें वर्णित आत्मजागृतिका (अन्तिम) दिन भी प्रकट कर दिया। इसी कृपाके द्वारा ब्रह्मात्माओंने यह रहस्य समझा और मूलमिलावामें श्री राजजीके साथ हुई एकान्त चर्चा (प्रेम संवाद)के गूढ़ रहस्य भी स्पष्ट कर दिए।

सो फुरमान मेहेरें खोलिया......रसूल मुहम्मदके अनुयायी कुरानको

खुदाका फुरमान अर्थात् परमात्माका आदेश मानते हैं। उसमें ऐसे अनेक रहस्य हैं जो वर्षों पर्यन्त स्पष्ट नहीं हुए थे। रसूल मुहम्मदने कहा था कि कयामतके समय स्वयं परमात्मा आएँगे और दुनियांका न्याय करेंगे। उस समय मैं भी उनके साथ उपस्थित रहूँगा। तभी ये सारे रहस्य स्पष्ट होंगे। महामति कहते हैं, वह कयामतकी घड़ी आ गई है। कयामतका अर्थ होता है लय। आत्मामें जागृति आनेपर जगतका अस्तित्व नहिवत् होता है। यही लय है। इस प्रकारके अनेक रहस्य महामतिने स्पष्ट किए और कयामतकी घड़ी जाहेर कर दी।

मेहेरें समझें मोमिने.......किन्तु उक्त रहस्योंको कौन समझेगा ? इसके लिए महामति कहते हैं कि श्री राजजीकी अपार कृपासे ब्रह्मात्माएँ ही यह रहस्य समझ सकती हैं। उन्होंने ही इस जगतमें आकर परमधामकी सम्पदा प्रकट की है। परमधाममें श्री राजजीके साथ हुई चर्चाको भी वे ही स्पष्ट कर सकती हैं। इतना ही नहीं ब्रह्मात्माओंमें यह भी क्षमता है कि वे अपने संसर्गमें आकर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीको समझनेवालोंको मुक्तिस्थलका सुख भी प्रदान कर सकती हैं।

(क्रमश.........)

नव ज्ञान

०१.**भारतवर्षके नौ खण्डका नाम :** इन्द्रद्वीप, कशेरुमान, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्यद्वीप, गान्धर्वद्वीप, वरुण, हिन्दुस्तान। ०२.**नव प्रकारकी भक्ति :** श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दनं, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन। ०३.**नव निधि :** पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खरब। ०४.**नवयोगी :** कवि, हरि, अन्तरिक्ष, प्रबुद्र, पिप्पलायन, आविहेत्रि, द्रुमिल, चमूस और करभाजन। ०५. **जम्बुद्वीपके नव खंड :** हरिवर्ष, भरत, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, रम्यक, हिरण्य और कुरु। ०६.**परमधामके नौ गुण :** सत, चिद्, आनन्द, अनन्त, अद्वैत, साकार, प्रेम, जीवन और सुन्दर। ०७.**स्वप्निक ब्रह्मांडके नौ गुण :** मोह, अज्ञान, भर्म, कर्म, काल, शून्य, नींद, निर्गुण और निरंजन। ०८.**शरीरके नौ गुण :** असत्, जड़, दुःख, अन्त, द्वैत, निराकार, मोह, मृत्यु और कुरूप। ०९.**व्रजकी नवनन्दराजा:** धरानन्दजी, ध्रुवनन्दजी, उपनन्दजी, अभिनन्दजी, नन्दजी, सुनन्दजी, कर्मानन्दजी, धर्मानन्दजी और वल्लभनन्दजी।

संकलन : योगेन्द्र उप्रेति

शिष्टाचार ही जीवन है

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज

मानव जीवन संस्कारोंका पुञ्ज है। संस्कारोंके प्रभावसे ही जीवनकी ज्योति प्रगट हुआ करती है। संस्कारोंसे ही जीवनको विकसित और सुगन्धित बनाया जा सकता है। संस्कारहीन जीवन सेमर(शिमल)के फूलके समान प्रदर्शन मात्र है। हमारे संस्कार जितने उच्च और अनुकरणीय होंगे, हम भी उतने ही उच्च कोटिके आदर्श पुरुष बन सकते हैं। तत्त्वज्ञानकी कसौटी आचरणकी शिला पर ही निर्भर है। यही कारण है कि वेदोंने, श्रुतियोंने पुनः पुनः घोषणा की है,

आचारवान् पुरुषो वेद. (श्रुति)

आचरणशील पुरुष ही ब्रह्मके स्वरूपको समझनेमें समर्थ हो सकता है। यह सिद्धान्त अटल सा चला आ रहा है कि जिस किसीने उस परमतत्त्वको ढूँढ़ निकाला है वह आचरणशील अवश्य रहा होगा। बुद्धिबल और स्मरण शक्तिको बढ़ानेमें भी आचरण रामबाणका काम करता है अर्थात् अचूक सिद्ध हो चुका है।

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।

छान्दोग्य उपनिषदमें इस विषयकी चर्चा बड़ी छानबीनके साथ की है। वहाँपर आहारको आचार-विचार, संस्कार एवं सबका आधार बतलाया है। आहारका अर्थ, केवल भोजन मात्र नहीं होता किन्तु जितनी भी इन्द्रियां हैं उनके द्वारा जो जो विषय ग्रहण किये जाते हैं, जो जो भावना धारण की जाती है वह सब आहारके अन्तर्गत हैं। उदाहरणके रूपमें उसे इस प्रकार समझना चाहिये।

नेत्रोंके द्वारा रूप और रंगके भावका आहरण होता है, वह नेत्रोंका आहार है। जीभके द्वारा रसका आस्वादन होता है, उसे रसनाका आहार कह सकते हैं। इसी प्रकार जितने भी शुभ या अशुभ कर्म हाथोंसे किये जाते हैं वे हाथका कर्मरूप आहार है।

इस प्रकार जो जो भाव या कर्म इन्द्रियों द्वारा किये जाते हैं वे सब आहारमें

आ जाते हैं। इस प्रकारसे देखा जाय तो हमारे सभी कर्म, सभी आचरण आहारमें गिने जा सकते हैं। अब आहारकी शुद्धि किस प्रकार मानी जाय ? तो कहना पड़ेगा कि बाहरसे जो कुछ भी हमारे अन्दर आये वह सब आहारमें ही समाविष्ट है। जब उसकी मन, वचन और कर्मसे शुद्धि प्राप्त की जा सके तो उसे कहते हैं आहार शुद्धि।

जब सब इन्द्रियोंके आहार विशुद्ध हो जायेंगें, तब सत्त्वकी शुद्धि प्राप्त होगी। एवं जब सत्त्वकी शुद्धि प्राप्त हो जायेगी तब हमारे हृदयमें विशुद्ध भावनाका उदय होगा, जो कभी हट नहीं सकता। जब भाव अटल हो जायेगा तब सभी बातें सुगम हो सकती हैं।

कुछ सज्जन शिष्टाचार अथवा आचारका अर्थ केवल नहाने धोनेको एवं खान–पानमें विचार लेकर चलना ही समझते हैं परन्तु वास्तविक तत्त्व इससे भिन्न है। मनुष्य जीवनकी प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक कर्म, प्रत्येक हित शिष्टाचारके अनुरूप ही उन्नतिके पथपर बड़ा करता है।

जो लोग खाने पीनेमें भेदभावको नहीं मानते वे भी आचरणको महत्त्व देते हैं। सदाचार किसी देश या जातिकी पैत्रिक सम्पत्ति नहीं है और न किसी धर्म या सम्प्रदायके दायित्त्वकी वस्तु है किन्तु सर्वदेशीय, सार्वत्रिक और व्यापक आचरण है। जो समाज, देश या सम्प्रदाय इसका पालन करता है वही उसके लाभको प्राप्त कर सकता है। सदाचार, त्याग, तप, संयम, नियम, अहिंसा सत्य शौच शुद्धभावना और स्थायी निश्चय ये सभी शिष्टाचारके अन्तर्गत विद्यमान हैं। लेना देना, खाना–पीना, उठना–बैठना सबमें आचार ओत प्रोत है। मनमें, वचनमें और कर्ममें आचारकी छाया ही काम करती है। मानसिक कल्पनाका स्वरूप हमारे आचारके ऊपर ही अवलम्बित है। स्थूल, सूक्ष्म दोनों जगतमें आचारका ही प्रतिबिम्ब पड़ता है। जैसा बिम्ब होगा प्रतिबिम्ब भी उसीके अनुरूप होगा। शुद्ध आचार मनुष्यको सत्य, सद्विचार एवं सत्कर्म करनेकी प्रेरणा देता है। जो इन तीनोंसे विमुख है वह चाहे दिनभर स्नान ध्यानमें ही क्यों न निमग्न बना रहे, वे सफल नहीं हो सकता। जो सदाचार हीन है, वह कदापि आदर्श महापुरुष नहीं बन सकता। जो व्यवहार मनुष्य जीवनमें धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय (मनसे, वचनसे और कर्मसे किसीका अपहरण न करना) पवित्रताका पालन करना, इन्द्रियोंके उपर निग्रह रखना,

बुद्धिपूर्वक कार्य करना, सदसद्विवेक रखना, सत्यका अवलम्बन, हिंसासे दूर रहना, उदार भावनाका उदय, शिक्षाका विकास करना सिखाता है, उसीका नाम ही सदाचार है।

यों तो विविध रूपमें आचरणको विद्यमान पाते हैं। फिर भी वह मुख्यतया लौकिक अलौकिक भेदसे दो प्रकारका होता है। इस लोकमें सुख शान्ति देनेके अतिरिक्त परलोकमें भी सुखका सृजन करना आचरणका मुख्य ध्येय है। लौकिक आचरणमें जो वस्तु अंशरूपसे क्षणिक पाई जाती है, अलौकिक आचरणमें वही अनन्त सुखको प्रदान करते हुए स्थायी सुख–शान्तिका विकास करती है।

अलौकिक शिष्टाचार कहता है कि प्रातःकाल ब्रह्म मुर्हूतमें उठ जाना चाहिये। नित्य क्रियासे निवृत्त होकर शुभ विचारोंके द्वारा आत्म कल्याणके मार्गका चिन्तन करना चाहिये। जगतके विवेक हीन मनुष्योंको सद्‌बुद्धि प्रदान कर उन्हें जगा देना चाहिये। प्रत्येक स्त्री–पुरुषको जाग्रत ज्ञान देकर आत्मकल्याणके पथका पथिक बनाना चाहिये। जो दीन–हीन दशामें पड़े हैं, जिन्हें अपने आत्म स्वरूपका ज्ञान नहीं है, जो मनुष्य होकर भी पशुवत जीवन व्यतीत करते हैं, उन सबको सन्मार्ग बताकर स्थायी शान्तिका पाठ पढ़ाना चाहिये।

जो मत मतान्तरोंके अज्ञानमें फँसे हैं, जो नाना मतवादियोंके मतमें पड़कर मतवाले बन पड़े हैं, उन्हें भी सनातन भूमिकाकी ओर जानेका संकेत देना चाहिये एवं जो जीवात्मा अपने मूल धामको भूलकर इधर उधर चक्करमें पड़े हैं, उन्हें भी विवेक द्वारा समझा कर अपने प्राचीन घरका मार्ग बताना यह भी अलौकिक आचरणवालेसे ही बन सकता है। अलौकिक मार्गको प्रशस्त और सुगम बनानेमें जितना भी तप त्याग या परिश्रम पड़े उससे पीछे न हटना यह भी अलौकिक आचरणशील पुरुषोंका ही कर्तव्य है।

जिससे अलौकिक वस्तु प्राप्त हो उसे अलौकिक और जिससे लौकिक अभ्युदय प्राप्त हो उसे लौकिक सदाचार कहते हैं। मन्दिरमें जाकर पूजा–पाठ करना, चरणामृत प्रसाद लेना, सत्सङ्ग ज्ञान, कथा वार्ता श्रवण करना, सदुपदेश ग्रहण करना, चन्दन, तिलक मालादिसे विश्वासमें वृद्धि करना ये सब अलौकिक आचरणमें ही गिने जाते हैं।

जो कुछ कर्तव्य कर्म करना, उसके फलकी अभिलाषा न रखना, या फिर

अपने कर्मोंको प्रभुके अर्पण करते जाना, यह भी परम उत्तम आचरण है। परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये किअशुभ कर्म करते हुए अर्पणकी भावना नहीं रखनी चाहिये। जिस प्रकार किसी महापुरुषको अयोग्य पदार्थ देना योग्य नहीं, उसी प्रकार प्रभुको भी पाप कर्म अथवा निषिद्ध आचरणको कभी अर्पण करनेकी चेष्टा न करें, ऐसा करनेसे मनुष्यकी भावना विशुद्ध हो जाती है। इस प्रकारसे अलौकिक आचरणके भी विविध भेद हो सकते हैं। सदुपदेश देते हुये जाग्रत करनेकी सेवा करना यह सबसे उत्तम अलौकिक सदाचार है।

लौकिक आचरणमें अपनेसे बड़ोंको प्रणाम करना, माता पिता, गुरु आदिमें पूज्य बुद्धि रखना, हिंसा कर्म तथा दुराचारका परित्याग करना, सात्विक भोजनसे जीवन व्यतीत करना पवित्र कर्म, पवित्र भावना, उदार–चरित्र होना एवं परमार्थ जीवन बिताना, प्रत्येक समय विचार पूर्वक कर्म करना ये सब लौकिक आचरणके अन्तर्गत माने जा सकते हैं।

चेतन सेवा भी लौकिक आचरणके अन्तर्गत है। जीवमात्रके प्रति उपकार भावना रखना धार्मिक जीवन व्यतीत करना ये भी सब आचरणके अन्दर ही माने गये हैं। विशुद्ध भोजन, विशुद्ध चरित्र, आदर्श व्यवहार ये भी आचरणकी कसौटी है। बिना कसौटीके परीक्षा सही नहीं होती। उसी प्रकार आचरणको कसौटी पर कसनेके लिये उक्त बातें कही गई है।

इस प्रकार आचरणको शिष्ट पुरुषोंने विविध रूपमें गाया है। शिष्टोंके द्वारा अपनानेके कारण ही उसे शिष्टाचार कहा जाता है।

शिष्टाचार मनुष्यके लिये सबसे उच्च शिक्षण है। शिष्टाचारके साथ ही आस्तिक भावनाका उदय होता है। जहाँ पर शिष्टाचारकी कमी होगी, वहाँ आस्तिक भावका विशुद्धरूप नहीं टिक सकता। यही कारण है कि शास्त्रोंमें इसको बड़ा महत्त्व दिया है।

आचाराल्लभते लक्ष्मीं आचारात्प्राप्यते यशः।
आचाराद्दीर्घायुश्च आचाराद् ज्ञानमुत्तमम् ॥

आचारसे लक्ष्मी बढ़ती है, आचारसे ही यश प्राप्त होता है। आचारका पालन करनेसे मनुष्य दीर्घायु हो जाता है एवं आचारके प्रतापसे ही उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार देखा जाय तो आचार मनुष्य जीवनको सफल बनानेकी चाबी

है। धनबल, आयुबल, यशका विस्तार और उत्तम ज्ञानके विकासके लिये भी हमें आचारका सेवन करना चाहिये ।

व्यवहार और व्यवसाय भी आचारके आधीन हैं । प्रत्येक अवस्थामें आचरण हमें सफलता प्रदान करता है । स्त्री जातिका सबसे उत्तम आचरण प्रतिव्रता धर्मका पालन करना है। पतिव्रता स्त्री सबसे उत्तम कोटिकी मानी गई है। ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करना मनुष्यका सबसे उत्तम आचरण है ।

सन्त महात्मा तथा महापुरुषोंके लिये ब्रह्मचर्य उत्तम आचरण है। ब्रह्मचर्यके साथ सदाचारका पालन करना विद्वानों तथा वीर योद्धाओंका तो भूषण ही है ।

क्षत्रियोंके लिये तथा वैश्योंके लिये नीतिपूर्वक द्रव्यको एकत्रित करनेका नाम भी सदाचार ।

द्रव्ये शुचिः स शुचिर्नरः

धर्मशास्त्रका तो अटल विश्वास है कि जिसकी कमाई विशुद्ध है। जिसका धन पवित्र है, छलकपटसे नहीं कमाया गया हो वही मनुष्य आचरणशील हो सकता है। विश्वका चौदह आना समाज कमाईके ऊपर निर्भर है। दो आना समाज स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करता होगा । मनुष्य अन्य विषयोंमें उत्तम आचरणका पालन भी करता है परन्तु उसकी कमाई उत्तम नहीं है तो उसे आचरणहीन मानना होगा ।

इसी प्रकार अन्य विषयोंमें भी आचरणको महत्त्व दिया है। जो अनन्य भक्त हैं, प्रेमलक्षणा भक्तिके उपासक हैं, उनके लिये अनन्य–निष्ठा रखना यह भी आचरणमें निहित है। अन्य देवोंकी उपासना करना यह भी एक प्रकारसे व्यभिचार माना गया है । जो आचरण किसी प्रकारके ज्ञानको अथवा धारणाको धक्का नहीं पहुँचाता उसे ही सदाचार माना गया है ।

शिक्षाका अभ्युदय और विकास भी आचरणके ऊपर निर्भर है। जो शिक्षा हमें आवागमनके बन्धनसे न छुटा सके, जो शिक्षा हमें सन्मार्ग न बता सके उसे शिक्षा कहना सुसंगत नहीं। यही कारण है कि मनुने शिक्षाग्रहणके साथ दीक्षाको भी अनिवार्य बतलाया है । यथा,

एतांश्चान्यांश्च सेवेत दीक्षा विप्रो वने वसन् ।
विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्धये श्रुतीः ॥

वनमें निवास करते हुए द्विजोंको चाहिये कि उपनिषद्के द्वारा जाननेयोग्य आत्माको सिद्धि प्रदान करनेवाली विविध दीक्षाओंको भी धारण करें। ये दीक्षा क्या है ? ये वही दीक्षा हैं जिनके धारण करनेसे आस्तिक भाव बढ़ता रहता है। आचरणमें दिव्य ज्योतिका बढ़ता हुआ प्रकाश मनुष्यको एक उच्च कोटिका आदर्श पुरुष बना देता है।

इसलिये सभी शिक्षा आचरणके ऊपर निर्भर हैं यह सिद्धान्त मौलिक बन जाता है। शिक्षाका विकास, शिक्षाका विजय सदाचरणके ऊपर अवलम्बित है। जो शिक्षाके साथ आचरणको महत्व नहीं देते वे शिक्षाके सब अंगोंको नहीं समझते यही मानना होगा। इसलिये सुन्दरसाथजी ! हमारे यहाँ पूर्व महापुरुषोंने जो जो नियम शिक्षा पत्री अथवा उपदेश द्वारा हमें बताया है वह हमारे हितके लिये है। उसका कभी परित्याग नहीं करना चाहिये। किन्तु जितना भी बने उसका पालन करना चाहिये यही शिक्षाका निचोड़ है।

शुभ सन्देश

श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिरमें ।
आयोजित श्री प्राणनाथजी प्रागट्य महोत्सवके ।।

सन दो हजार नौ सितम्बर सोरहसे बाईस तक ।
मुख्य आकर्षक तीनसौ तेरह पारायण तीनसौ तेरह राजभोग ।।

तीर्थ धामका महोत्सवमें भाग लेनेको जिसको मिले योग ।
कथा प्रवचन भजन कीर्तनसे, हटेगा सबका सारा शोक ।।

सांस्कृतिक कार्यक्रम शोभायात्र बारहलाख मन्त्र जप ।
प्रागटय आरती ध्वजारोहण छठ्ठी आनन्द ही आनन्द सब ।।

उपस्थित सुन्दरसाथजीका, होगा प्रफुल्लित मन ।
जयन्ती पर्व त्योहारसे प्राप्त कुशल अखण्ड धन ।।

पं. कुशलदास बराल

विचार परिवर्तनसे
जीवन परिवर्तन तक

श्री सुरेन्द्र शर्मा–श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

एक आदमी सड़क किनारे खड़े खड़े बेलुन बेच रहा था। पासमें एक छोटा सा अक्सिजन गैसका सिलिण्डर भी था। सिलिण्डरसे बेलुनके अन्दर गैस भरता था, बेलुन फुलकर हवामें उड़ते थे। रंगी विरंगी अनेक बेलुने थे उनको देखकर बच्चे खुशखुशाल हो जाते और खरीदकर ले जाते थे। उसका व्यापार अच्छी तरहसे जम गया था। अचानक एक छोटी सी बच्ची पीछेसे आकर पुछती है उस आदमीको कि चाचाजी, आपके पास पिले, हरे, सफेद और लाल रङ्गके अनेक बेलुन हैं लेकिन काले रङ्गके बेलुन दिखाई नहीं दे रहे हैं। क्या काले बेलुन आकाशमें नहीं उड़ सकते ? संयोग वश उस आदमीके पास काले बेलुन नहीं थे। सब बिक चूके थे। वह आदमी उस बच्चीको जबाब देता है कि 'बेटी, बेलुनको आकाशमें उड़नेके लिए रङ्गका कोई महत्त्व नहीं होता परन्तु उसके अन्दर क्या है, यह महत्त्वपूर्ण है। रङ्ग चाहे जो कोई भी हो, उसके अन्दर हिलियम या अक्सिजन ग्यास भरने पर यह आकाशमें उड़ने लगता है।'

प्रिय मित्रों !

ठीक ईसी तरह, आदमी चाहे सुन्दर हो या कुरूप, काला हो या गोरा कहीं भी रहने वाला हो, उसकी उचाई या उडान उसके मनके अन्दर चलने वाले विचारोंकी श्रृंखलाओंसे मापा जाता है न कि उसके चेहेरे मोहरेसे। विचारके आधार पर ही आदमीकी पहिचान हो जाती है। आप देख सकते हैं, समाजमें कितने लोग प्रसन्न और खुश खुशाल नजर आते हैं। वे जीवनके हर पलको अच्छी तरहसे जीना जानते हैं तो कितने लोग दुःखी दुःखी होकर भटकते रहते हैं। चेहरा हमेशा मुरझाया हुआ रहता है। किसी न किसी चिजकी शिकायत लेकर इधरसे उधर भटकते रहते हैं। उनको हर तरफ अंधेरा ही नजर आता है। उनको एक तरहका भ्रम रहता है कि मैं ही अच्छा कर रहा हूँ और सारे लोग गलत रास्ते पर हैं। इस तरहकी मनकी मलिनता भी मानसिक बिमारीका एक रूप है। इसीलिए आइए ! सबसे पहले यह

मनको समझनेकी कोशिश करें ।

मित्रों ! समग्र मनका करीब ९०% हिस्सा अवचेतन मनका (Sub Conscious mind) होता है । अवचेतन मनका कार्य यह है कि आदमी जो सोचता है या विचारता है उसे ग्रहण करना और उसीके आधार पर प्रतिफल देना । यह मन नहीं जानता कि आदमी अच्छे विचार कर रहा है या खराब । अच्छे और बूरे विचारोंको अलग करनेकी क्षमता नहीं है उसके पास । विचारोंको चूपचाप ग्रहण करना और उसीके आधार पर प्रतिफल देना ही उसका प्रमुख कार्य है । इसीलिए आदमीका सम्पूर्ण व्यक्तित्वका निर्माण इसी अवचेतन मनके द्वारा ही होता है । यह आप पर निर्भर है कि आप किस तरहका जीवन जीना चाहते हैं । आपके मनके अन्दर निरन्तर चलने वाले विचार ही आपके व्यक्तित्वके लिए जिम्मेदार हैं । कोई भी व्यक्ति काजलकी कोठरीसे बेदाग नहीं निकल सका है । उसी प्रकार कु विचारोंके कारण आपके मनमें दाग अवश्य लगेगा । इसीलिए यदि हम जीवनमें बदलाव चाहते हैं तो विचारोंकी दिशा बदल लें । हम चाहते तो हैं खुशी और प्रसन्नतासे भरा हुआ जीवन परन्तु विचार हमारे नकारात्मक हैं तो सिर्फ हमारे चाहनेसे कुछ नहीं होगा । अवचेतन मन हमारे विचारोंके आधार पर ही कार्य करेगा ।

हमारा मन विशेष करके दो तरहसे विचारोंको ग्रहण करता है । एक तो हम खुद ही विचारोंको जन्म देते हैं । जिसे स्व–सूचन (Auto-Suggestion) कहा जाता है । दूसरा, हम बाहरी वातावरणसे विचारोंको ग्रहण करते हैं । दोनों तरहसे ग्रहण किया हुआ विचार हमारे व्यक्तित्व पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं । इसीलिए कहा जाता है कि संगत अच्छे लोगोंके साथ ही किया जाना चाहिए । हमेशा सकारात्मक विचारोंको ही मनके अन्दर प्रवेश करने दें जिससे ऐसे व्यक्तित्वका निर्माण होगा जो विनम्रताके साथ साथ धैर्यवान, आत्म विश्वासी और दूसरोंका ख्याल रखने वाला भी होगा । आइए, सकारात्मक और नकारात्मक व्यक्तित्ववाले लोगोंमें क्या अन्तर है इसे जानने की कोशिश करें और अपने आपको इस माप दण्ड पर मापनेका प्रयत्न करें ।

सकारात्मक व्यक्तित्व	**नकारात्मक व्यक्तित्व**
समस्याके समाधान ढूढ़ते रहते हैं ।	**लोगोंके विषयमें ही चर्चा करते रहते हैं ।**
दूसरोंका ख्याल रखते हैं ।	**दूसरोंकी आलोचना ही करते रहते हैं ।**

विनम्र रहते हैं ।	**अहंकारी और घमंडी होते हैं ।**
दृढ़ विश्वासके साथ कार्य करते हैं ।	**जी हजूरी करते हैं ।**
आत्म विश्वाससे भरे हुए होते हैं ।	**दिग्भ्रमित करते हैं ।**
चरित्रवान होते हैं ।	**झूठी इज्जतकी परवाह करते हैं ।**
स्थिर रहते हैं ।	**हमेशा उत्तेजित रहते हैं ।**
जिम्मेवारी स्वीकारते हैं ।	**दुनियाँको दोष देते हैं ।**
सबकी हितकी वात करते हैं ।	**स्वार्थी होते हैं ।**
आशावादी होते हैं ।	**भाग्यवादी होते हैं ।**
सिखनेके लिए तैयार रहते हैं ।	**सब कुछ जानता हूँ ऐसा सोचते हैं ।**
छलफलके लिए तैयार रहते हैं ।	**हमेशा विवाद पर उतर आते हैं ।**
अन्तर्संचालित होते हैं ।	**बाहरी वातावरणसे प्रभावित होते हैं ।**
दूसरोंको आदर करते हैं ।	**दूसरोंको हमेंशा नीचा देखते हैं ।**

मित्रों ! उपर दिये गये प्रत्येक विन्दुओं पर नजर डालें और अपने आपको मापनेकी कोशिश करें कि वास्तवमें मेरा व्यक्तित्व कैसा है । सच्चे दिलसे यह अभ्यास करना होगा । यदि आपको लगे कि अहो ! मेरा व्यक्तित्व तो नकारात्मकतासे भरा हुआ है तो आपके जीवनमें अब परिवर्तनकी आवश्यकता है । क्या यह अच्छा नहीं है कि आप खुशी और प्रसन्नतासे पूर्ण एक सरल व्यक्ति बनें । इसके लिए आपको कमसे कम २१ दिन तक प्रत्येक दिवस दिनमें ३ बार सकारात्मक विचारोंको एक कागजमें लिखकर उसे पठन करना होगा, पूरा दिलसे मनन करना होगा । ध्यान रहे शंका एक वायरस की तरह है जो समग्र चिन्तन धारणको नष्ट कर देती है इसीलिए दृढ़ संकल्पके साथ आजसे ही उदाहरणके तौर पर नीचे दिए गए सकारात्मक विचारोंका पठन करें और मनके अन्दर उसे चित्रांकित करते जाएँ । तो उठाइए कलम और हो जाइए शुरु...

सकारात्मक विचार (अभ्यासके लिए उदाहरणके तौर पर)

'आजका दिन मैं समस्याओंका समाधान ही ढूंढ़गा और दूसरोंका अनावश्यक आलोचना नहीं करूँगा ।'

'आजका पूरा दिन मैं खुब खुश रहूँगा और हंसता हुआ चेहराके साथ सबके साथ प्रेमसे मिलूंगा ।'

'आजका दिन मैं बिलकुल शान्त और प्रसन्न रहुँगा ।'

'कोई खराब व्यवहार करे तो मनमें नहीं लूंगा ।'

इस तरहके सद्विचारोंको एक कागजमें लिखकर रखें और २१ दिन तक नियमित चिन्तन करें। आपको निश्चित रूपसे अनुभव होगा कि सचमुचमें जीवन जीने लायक हो गया है। सद्विचारोंको आप अपने ढंगसे और आवश्यकता अनुसार बढ़ा भी सकते हैं। आपका जीवन मंगलमय हो, इसी शुभकामनाके साथ प्रणाम ।

वास्तविक आरोग्य

वास्तविक आरोग्य परमात्मप्राप्तिमें ही है। इसलिये गीतामें परमात्माको 'अनामय' कहा गया है, 'जन्मबन्धविनिर्मुक्तां पदं गच्छन्त्यनामयम्' (२–५१) 'आमय' नाम रोगका है। जिसमें किंचिन्मात्र भी किसी प्रकारका रोग अथवा विकार न हो, उसको 'अनामय' अर्थात् निर्विकार कहते हैं। जन्म मरण ही सबसे बड़ा रोग है। **को दीर्घरोगो भव एव साधो** (प्रश्ननोत्तरी ७)। अनामय पदकी प्राप्ति होनेपर इन जन्म मरणरूप रोगका सदाके लिये नाश हो जाता है। इसलिये जो महापुरुष परमात्मतत्त्वको प्राप्त हो चुके हैं, वही असली निरोगी हैं। उपनिषद्में आया है,

आत्मानं चेद् विजानीयादयमस्मीति पुरुषः ।
किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुंसज्वरेत् ॥

(बृहदारण्यक० ४–४–१२)

यदि पुरुष आत्माको मैं यह हूँ, इस प्रकार विशेषरूपसे जान जाय तो फिर क्या इच्छा करता हुआ और किस कामनासे शरीरके तापसे अनुतप्त हो ?

तात्पर्य है कि आत्मा और परमात्मा दोनों नीरोग (अनामय) हैं। रोग केवल शरीरमें ही आता है। इसलिये कहा गया है। **शरीरं व्याधिमन्दिरम्** । शरीरमें रोग दो प्रकारसे आते हैं। प्रारब्धसे और कुपथ्यसे। पुराने पापोंका फल भुगतानेके लिये शरीरमें जो रोग पैदा होते हैं, वे '**प्रारब्धजन्य**' कहलाते हैं। जो रोग निषिद्ध खान पान, आहार–विहार आदिसे पैदा होते हैं, वे '**कुपथ्यजन्म**' कहलाते हैं। अतः पथ्यका सेवन करनेसे, संयमपूर्वक रहनेसे और औषधि लेनेसे

भी जो रोग नहीं मिटता, उसको 'प्रारब्धजन्य' जानना चाहिये। औषधि और पथ्यका सेवन करनेसे जो रोग मिट जाता है, उसको 'कुपथ्यजन्य' जानना चाहिये।

कुपथ्यजन्य रोग चार प्रकारके होते है, १) **साध्य:** जो रोग औषधि लेनेसे तत्काल मिट जाते हैं। २) **कृच्छ्रसाध्य :** जो रोग कई दिनतक औषधि और पथ्यका विशेषरूपसे सेवन करनेपर मिटते हैं। ३) **याप्य :** जो पथ्य आदिका सेवन करनेसे दबे रहते हैं, जड़से नहीं मिटते ४) **असाध्य :** जो रोग औषधि आदिका सेवन करनेपर भी नहीं मिटते। प्रारब्धसे होनेवाला रोग तो असाध्य होता ही है, कुपथ्यसे होनेवाला रोग भी ज्यादा दिन रहनेसे कभी कभी असाध्य हो जाता है। ऐसे असाध्य रोग प्राय: औषधियोंसे दूर नहीं होते है किसी संतके आशीर्वादसे, मंन्त्रोंके प्रबल अनुष्ठानसे अथवा विशेष पूण्यकर्म करनेसे ऐसे दूर हो सकते हैं।

कुपथ्यजन्य रोगके असाध्य होनेमें कई कारण हो सकते हैं, जैसे – १) रोग बहुत पुराना हो जाय, २) रोगी कुपथ्यका सेवन कर ले, ३) जिन जड़ी बूटियोंसे औषधियाँ बनी हों, वे पुरानी हों, ४) रोगीका वैद्यपर और औषधपर विश्वास न हो, ५) रोगीका खान पान, आहार–विहार आदिमें संयम न हो आदि–आदि।

जो रोगी बार बार तरह तरहकी दवाईयाँ लेता रहता है, दवाइयोंका अधिक मात्रामें सेवन करता है, उसको दवाईयोंसे विशेष लाभ नहीं होता, क्योंकि दवाइयाँ उसके लिये आहाररूप हो जाती हैं। गाँवोंमें रहनेवाले प्राय: दवाई नहीं लेते, पर कभी वे दवाई लें तो उनपर दवाई बहुत जल्दी असर करती है। जो लोग मदिरा, आदि नशीली वस्तुओंका सेवन करते हैं, उनकी आँतें खराब हो जाती हैं, जिससे उनके शरीरपर दवाइयाँ असर नहीं करतीं। जो व्यक्ति धर्मशास्त्र और आयुर्वेद शास्त्रके विरुद्ध खान पान, आहार विहार करते हैं, उसका कुपथ्यजन्य रोग दवाइयोंका सेवन करनेपर भी दूर नहीं होता।

अधिकतर रोग कुपथ्यसे पैदा होते हैं। कुपथ्यजन्य रोगसे शरीरकी ज्यादा क्षति होती है। कुपथ्यका त्याग और पथ्यका सेवन दवाइयोंसे भी बढ़कर रोग दूर करनेवाला है। इसलिये कहा गया है,

पथ्ये सति वदार्त्तस्य किमौषधनिषेवनै: ।
पथ्येऽसति वदार्त्तस्य किमौषधनिषेवनै: ॥

(वैद्यजीवनम् १०)

पथ्यसे रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषधके सेवनसे क्या प्रयोजन ? और

पथ्यसे न रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषधके सेवनसे क्या प्रयोजन ? तात्पर्य है कि पथ्यसे रहनेपर रोगी व्यक्तिका रोग बिना औषध लिये मिट जाता है और पथ्यसे न रहनेपर उसका रोग औषध लेनेपर भी नहीं मिटता।

रोगीके साथ खाने पीनेसे, रोगीके पात्रमें भोजन करनेसे, रोगीके आसनपर बैठनेसे, रोगीके वस्त्र आदिको काममें लेनेसे तथा व्यभिचार आदिसे ऐसे संकर (मिश्रित) रोग हो जाते हैं, जिनकी पहचान करना बड़ा कठिन हो जाता है। जब रोगकी पहचान ही नहीं होगी तो फिर वैद्यकी दवाई क्या काम करेगी ?

युगके प्रभावसे जड़ी बूटियोंकी शक्ति क्षीण हो गयी है। कई दिव्य जड़ी बूटियाँ लुप्त हो गयी हैं। दवाइयाँ बनानेवाले ठीक ढंगसे दवाइयाँ नहीं बनाते और पैसोंके लोभमें आकर जिस दवाईमें जो चीज मिला देते हैं। अतः वह दवाई वैसी गुणकारी नहीं होती।

जो रोगोंके कारण दुःखी रहता है, उसपर रोग ज्यादा असर करते हैं। परंतु जो भजन–स्मरण करता है, संयमसे रहता है, प्रसन्न रहता है, उसपर रोग ज्यादा असर नहीं करते। चित्तकी प्रसन्नतासे उसके रोग नष्ट हो जाते हैं।

प्रारब्धजन्य रोगके मिटनेमें दवाई तो केवल निमित्तमात्र बनती है। मूलमें तो प्रारब्धकर्म समाप्त होनेसे ही रोग मिटता है। जिन कर्मोंके कारण रोग हुआ है, उन कर्मोंसे बढ़कर कोई पुण्यक्रम, प्रायश्चित, मन्त्र आदिका अनुष्ठान किया जाय तो प्रारब्धजन्य रोग मिट जाता है। परंतु इसमें अनुष्ठान प्रबल हो तो रोग मिट जाता है और अनुष्ठानकी अपेक्षा प्रारब्ध प्रबल हो तो रोग नहीं मिटता अथवा थोड़ा ही लाभ होता है।

लोगोंकी ऐसी धारणा बन गयी है कि दवाईके रूपमें मांस अण्डा, मदिरा आदिका सेवन करना बुरा नहीं है। वास्तवमें यह महान् पतन करानेवाली बात है। ऐसा माननेवाले वे ही लोग होते हैं, जिनका केवल शरीरको ठीक रखनेका, सुख आरामका ही उद्देश्य है, जिनको धर्मकी अथवा अपना कल्याण करनेकी परवाह नहीं है। अशुद्ध चीज लेनेसे शरीर ठीक हो जायगा यह नियम नहीं है, उलटे नये रोग पैदा हो जायँगे। पशुओंके रोग उनका मांस खानेवालोंमें भी आ जाते हैं। अशुद्ध चीज लेनेसे जो पाप होगा, उसका दण्ड तो भोगना ही पड़ेगा। अतः दवाईके रूपमें भी अशुद्ध चीज नहीं खानी चाहिये। जिसके शरीरमें रोग नहीं है, जिसका उद्देश्य अपना कल्याण करना है, वह नाशवान् शरीरके लिये अशुद्ध

चीजोंका सेवन करके पाप क्यों करेगा ?

अन्न और जल इन दोनोंके सिवाय मनुष्यमें अन्य किसी चीजका व्यसन नहीं होना चाहिये। जीवित रहनेके लिये अन्न और जल लेना ही पड़ता है, पर चाय, काफी, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, पान–मसाला, तम्बाकू, अफीम, चिलम आदि न ले तो मनुष्य मर नहीं जाता। इन चीजोंको लेनेसे आदत पड़ जाय तो फिर उनको छोड़ना बड़ा कठिन होता है और मनुष्य उनके अधीन हो जाता है। पराधीनको स्वप्नमें भी सुख नहीं मिलता **'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' (मानस बाल० १०२–३)**

गीतामें भगवान्ने **'आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः'** पदोंसे सात्त्विक भोजनका फल पहले बताया और बादमें भोजनके पदार्थोंका वर्णन किया। इससे सिद्ध होता है कि सात्त्विक मनुष्य भोजन करनेसे पहले उसके परिणामपर विचार करता है। परंतु राजस मनुष्यकी दृष्टि सबसे पहले भोजनकी तरफ जाती है, उसके परिणामकी तरफ नहीं, इसलिये भगवान्ने पहले राजस भोजनके पदार्थोंका वर्णन किया और बादमें **'दुःखशोकामयप्रदा'** पदसे उसका फल बताया। अगर मनुष्य आरम्भमें ही भोजनके परिणाम पर विचार करे तो फिर उसको राजस भोजन करनेमें हिचकिचाहट होगी, क्योंकि कोई भी मनुष्य परिणाममें दुःख, शोक और रोगको नहीं चाहता। परंतु भोजनमें आसक्ति होनेके कारण राजस मनुष्यकी बुद्धि परिणामकी तरफ जाती ही नहीं। तामस मनुष्यमें मूढ़ता रहती है, अतः मोहपूर्वक भोजन करनेके कारण वह परिणामको देखता ही नहीं। इसलिये भगवान्ने तामस भोजनका फल बताया ही नहीं। भोजन न्याय युक्त है या नहीं, उसपर मेरा हक लगता है या नहीं, वह शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार है या नहीं, उसका परिणाम अच्छा है या नहीं इन बातोंपर कुछ भी विचार न करके तामस मनुष्य पशुकी तरह खानेमें प्रवृत्त हो जाता है।

सात्त्विक मनुष्य तो श्रेष्ठ है ही, उससे भी श्रेष्ठ वह परमात्माका भक्त है, जो भोजनके पदार्थोंको पहले परमात्माको अर्पण करके फिर उनको प्रसादरूपसे ग्रहण करता है। इसलिये गीतामें कहा है,

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ।।

(९-२७/२८)

हे कुन्तीपुत्र ! तू जो कुछ करता है, जो कुछ भोजन करता है, जो कुछ यज्ञ करता है, जो कुछ दान देता है और जो कुछ तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर दे । इस प्रकार मेरे अर्पण करनेसे तू कर्मबन्धनसे और शुभ (विहित) तथा अशुभ (निषिद्ध) सम्पूर्ण कर्मोंके फलोंसे मुक्त हो जाएगा । ऐसे अपनेसहित सब कुछ मुझको अर्पण करनेवाला और सबसे सर्वथा मुक्त हुआ तू मुझे प्राप्त हो जायगा ।

सब कुछ परमात्माको अर्पण करनेका परिणाम यह होगा कि मनुष्यका जन्म मरणरूप महान् रोग मिट जायगा । जन्म मरणरूप रोग मिटनेसे ही मनुष्यको वास्तविक आरोग्यकी प्राप्ति होगी । इस आरोग्यको प्राप्त करना ही मानव जीवनका लक्ष्य है ।

तीन प्रकारके भोजन

सात्विक : **आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।**
रस्यां स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ।।

राजस : **कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।**
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ।।

तामसः **यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।**
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ।।

सन्त वाणी

● जिसकी साधना करनेकी तीव्र उत्कंठा होती है, परमात्मा उसके पास सद्गुरुको भेज देते हैं । गुरुके लिये साधकोंको चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

● साधु संग करनेसे जीवका मायारूपी नशा उतर जाता है ।

● जिसको दस आदमी जानते-मानते तथा आदर सत्कार करते हैं तो समझना चाहिये कि उसके भीतर परमात्मा की विभूति अधिक है ।

– संग्रहित

मनुष्य बनो

यजुर्वेदका महाघोष है–"**मनुर्भव:**" अर्थात् मनुष्य बनो। स्वाभाविक रूपसे यह प्रश्न उठता है कि क्या हम मनुष्य नहीं हैं जो वेदको ऐसा कहना पड़ा। पृथ्वी पर वर्तमानमें छ: अरबसे भी अधिक मानव विचरण कर रहे हैं तो क्या वे मनुष्य नहीं हैं। हाँ शक्ल सूरतसे वे अवश्य मनुष्य हैं परंतु गुणधर्मकी दृष्टिसे देखा जाए तो अधिकांश लोग पशुवत ही जीवन यापन कर रहे हैं।

वेद ऐसे मनुष्योंको मनुष्यकी कोटिमें नहीं रखता। ठीक भी है जैसे किसी व्यक्तिके पास धर्म नहीं हो तो उसे धर्मात्मा नहीं कहा जाता, किसी सरोवरमें जल नहीं हो तो उसे जलाशय नहीं कहा जाता। इसी प्रकार मनुष्यमें यदि मनुष्यत्व नहीं है तो उसे मनुष्य कैसे कहा जा सकता है? केवल मनुष्य शरीर पा लेने मात्रसे तो वह मनुष्य कहलानेका अधिकारी नहीं हो जाता। हमारे पास मनुष्यकी सूरत है परन्तु शीलताका अभाव है। ऐसे तो चोरको भी मनुष्य ही कहते हैं जो निर्दयताके साथ दूसरोंका धन चुरा लेता है, कसाईको भी मनुष्य ही कहते है जो प्रतिदिन मूक और निरीह पशु पक्षियोंका रक्त बहाकर प्रसन्न होता है।

कहनेमें तो वेश्याको भी मनुष्य कहते हैं जो रूप बाजारमें बैठकर चन्द चाँदीके टुकड़ोंके लिए अपने जीवनको पतनके गर्तमें धकेलती है। तात्पर्य यह है कि भगवत्कृपासे हमें मनुष्य शरीर तो मिला, पर दुर्भाग्यसे मनुष्यत्व नहीं पा सके जिसके बिना किया कराया सब धूलमें मिल गया और वेदको कहना पड़ा '**मनुर्भव:**' '**मनुष्य बनो**'। जब हम भर्तृहरिजीकी इस उक्ति पर विचार करते हैं तो वेदका कथन सत्य प्रतीत होता है और मनुष्य एवं पशुका अंतर स्पष्ट परिलक्षित होता है। यथा,

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म :।
ते मृत्यु लोके भुविभारभूता: मनुष्यरूपेण मृगा चरन्ति ॥

अर्थात् जिन लोगोंका मन विद्या, दान, ज्ञान, शील और धर्ममें रत नहीं है, वे तो मृत्युलोकमें पृथ्वी पर भार स्वरूप ही हैं और मनुष्य रूपमें मृगकी तरह विचरण करते हैं। वेदके कहनेका अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति विद्याके स्वरूपको न जानकर केवल अक्षर ज्ञानमें रत होकर अपने आपको विद्वान समझते हैं और

ब्रह्म प्राप्तिका साधन नहीं करते, जिनका आचरण धर्मानुकूल नहीं है, आत्म–कल्याणके मार्गका जिनको ज्ञान नहीं, जिसने इहलोक और परलोकका सुधार नहीं किया, जो मनुष्य प्रभुके द्वारा प्रदत्त धनका शास्त्रानुसार योग्य दान नहीं करता है, वह पाप खाता है और नरकोंका अधिकारी बनता है। दान करनेसे धन घटता नहीं अपितु बढ़ता है जैसा कि संत कबीर कहते हैं,

चिडी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर ।
दान दिए धन न घटे, कह गये दास कबीर ॥

वस्तुतः ज्ञान ही वह सत्य है जो मनुष्य और पशुमें भेद उत्पन्न करता है। ईश्वर – जीवन, प्रकृति–विद्या, अविद्या तथा बंधन–मोक्षका ज्ञान केवल मनुष्यको ही हो सकता है। आज मनुष्य केवल भौतिकवादमें ही उलझकर रह गया है। अध्यात्मवाद और भौतिकवाद दोनोंको साथ लेकर चलनेसे ही मनुष्यका कल्याण हो सकता है, अन्यथा केवल भौतिक सम्पन्नतासे पशुत्व जागृत हो उठेगा। ज्ञानके अभावमें मनुष्य केवल शकल–सुरतसे मनुष्य दिखाई देता है परन्तु गुणसे वह पशु ही रहता है। सत्य, अहिंसा, क्षमा, प्रेम, परोपकार, न्याय, धर्म, आदि गुणोंसे ही मनुष्यकी पहचान होती है। तप, त्याग, और दान उसकी महिमाका संवर्धन करते हैं। अतः मनुष्यताके मार्ग पर चलनेके लिए मनुष्यको ज्ञानवान अवश्य होना चाहिए।

मन, वाणी और कर्म द्वारा किसी भी प्राणीमें द्रोह न करना, सब पर दया करना और यथाशक्ति सुपात्रको दान देना यह शील कहलाता है। महाभारतके शांति पर्वमें कहा गया है,

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च शीलं तत प्रशस्यते ॥

शीलको मनुष्यका सबसे बड़ा गुण माना गया है। संत कबीर दास जी यहाँ तक कहते हैं कि शीलमें तीनों लोकोंकी सम्पदा समाहित होती है,

शीलवन्त सबतें बडा, रतनन की खान ।
तीन लोक की सम्पदा , रही शील में आन ॥

धर्मको मानवताका प्राण कहा गया है। हितोपदेशमें कहा गया है कि आहार, निद्रा, भय, और विषय–भोग यह चारों प्रवृतियां मनुष्य और पशुमें

स्वभावत: समान रूपसे पाई जाती हैं। दोनोंमें कोई अंतर है तो बस इतना कि मनुष्यमें अपने धर्मके पालनका विवेक होता है जो पशुमें नहीं होता है। यदि दोनोंमें यह अन्तर न हो तो मनुष्य और पशु एक समान ही हैं।

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेणहीना: पशुभि समाना: ॥

मनुस्मृतिमें धर्मके महत्वको प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि धर्म नष्ट करने वालेको धर्म नष्ट कर देता और धर्मकी रक्षा करने वालेकी धर्म रक्षा करता है – **धर्मो रक्षति रक्षित: ।** वस्तुत: धर्म ही जीवनकी आधारशिला है। इसके बिना सृष्टिके अस्तिवकी कल्पना नहीं की जा सकती। तनिक विचार कीजिए कि यदि सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आदि अपने धर्मका पालन छोड दें तो सृष्टिका चलना असम्भव हो जाएगा। यही बात मानव धर्ममें भी लागू होती है। यही कारण है कि जब–जब धर्मका पतन या नाश होता है तब–तब सर्वेश्वर इसकी पुनर्स्थापना हेतु अवतार लेते हैं।

गीतामें श्री कृष्णजी कहते हैं,

यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

अर्थात् हे भारत ! जब–जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं लोगोंके सम्मुख प्रकट होता हूँ। निष्कर्ष रूपमें यह कहा जा सकता है कि विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील तथा धर्मके गुणोंके बिना मनुष्यका अस्तित्त्व ही नहीं है, पर नर पशुके सदृश ही है। इसलिए वेदने मानवको मनुष्य बननेका निर्देश दिया है। यदि वह मनुष्य नहीं बनता है अर्थात् अपने भीतर मानवीय गुणोंका विकास नहीं करता है तो उसका जन्म लेना व्यर्थ है, क्योंकि जिस प्रयोजनके लिए उसका जन्म हुआ है वह पूर्ण नहीं होगा। शुक्रनीतिमें कहा गया है कि जाति और कुलका कोई महत्व नहीं है, केवल मनुष्यके कर्म, शील और गुण ही पूज्य हैं। जाति कुलसे श्रेष्ठत्व प्रतिपादित नहीं होता अर्थात् मनुष्यत्व स्थापित नहीं होता।

– ताराचंद आहुआ

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराजकी १७वीं पूण्यतिथि पर श्रद्धाञ्जलि

श्री निजानन्द गुरुकुलके प्रांगणमें स्थित ब्रह्मलीन आचार्य महाराजश्रीकी समाधिस्थानमें दिनांक : ०५.०८.०९ प्रात: श्रद्धाञ्जली कार्यक्रमका आयोजन सम्पन्न हुआ ।

उक्त प्रसंग पर परम पूज्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजके साथ-साथ ट्रस्टीश्री नवीनभाई परीख, ट्रस्टी श्री मनसुखभाई संघाणी, संत श्री रामदासजी, शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य, संत श्री सुरेन्द्रजी, श्री कनकराय व्यास, श्री मनजीभाई पटेलआदि महानुभावो तथा उपस्थित सुन्दरसाथजीने समाधि पर पुष्पार्पण कर भक्तिपूर्वक भावाञ्जलि व्यक्त किया ।

कार्यक्रमका प्रारंभ मेहेर सागरके सस्वर पाठके द्वारा हुआ । संत श्री सुरेन्द्रजीने अपने सुमधुर स्वरसे मेहेर सागरका सस्वर पाठ करवाया । इस प्रसंग पर श्री निजानन्द गुरुकुलके विद्यार्थियोंने समूह प्रार्थना द्वारा गुरुजीको याद किया । तत्पश्चात् प्रणामी विद्यामन्दिरके विद्यार्थी श्री कुश जोषीने सुन्दर वक्तव्य प्रस्तुत किया । इस अवसर पर प्रासंगिक उद्बोधन करते हुए शास्त्री श्री लक्ष्मण चैत्यन्यजीने कहा कि, गुरुजीने दिया योगदानको ध्यानमें रखकर उनके उपदेशोंको ग्रहण कर उनके बताये हुए मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी ।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराजने आशीर्वचन देते हुए कहा, श्रावण महिनामें श्रवणका विशिष्ट महत्त्व है । सत्सगं एवं परमात्माकी लीला कथामृत श्रवण कर हम अपनी भावनाओंको पवित्र बना सकते हैं । आज पूर्णिकाका पावन दिन है ।

हमारे गुरुदेव ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराजका जीवन त्याग तपस्या तथा पवित्रतासे ओतप्रोत था । उनका हृदय सरल एवं छलकपट रहित तपोपूत था । इस संस्थाके कण कणमें उनकी तपस्या समायी हुई है । महापुरुषोंके आशीर्वाद चारों तरफ फैला होता है । हमारी भावना, प्रयत्न तथा विचारोंमें निष्ठा नहीं हो तो हमें उसका अनुभव नहीं हो सकता । हम उस लाभसे वंचित रह जाते हैं । इसीलिए हम हमारी भावनाको सदैव पवित्र रखें ।

इस प्रसंगमें श्री निजानन्द गुरुकुलके विद्यार्थी, प्रणामी हाईस्कूल, विद्यामंदिरके अद्यापक वृंद तथा शहरके विविध स्थानोंसे विशाल संख्यामें उपस्थित सुन्दरसाथ एवं भक्तजनोंने पूज्य महाराजश्रीको श्रद्धा सुमन अर्पण किए । कार्यक्रमका सन्चालन श्री कनकराय व्यासजीने किया ।

श्री कृष्णजन्माष्टमीकी भव्य शोभायात्रा

जामनगरमें दिनांक १४ अगस्त २००९ के शुभ दिन श्री कृष्ण जन्माष्टमीकी शोभायात्रा बहुत ही सुन्दर रूपसे सम्पन्न हुई । श्री ५ नवतनपुरी धामके नेतृत्वमें आयोजित शोभायात्रामें जामनगरकी विभिन्न संस्था जैसे आनंदाबाबा आश्रम, पुष्टि संप्रदायकी मोटी हवेली, विश्व हिन्दू परिषद, गायत्री शक्तिपीठ तथा आर्य कल्चर क्लब आदि धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थायें सम्मिलत थीं । सभीने शोभायात्रामें उत्साहपूर्वक भाग लिया । सभी संस्थाने श्री कृष्णकी सुन्दर झांकी तैयारी की थी ।

इस विशाल शोभायात्राका मंगल प्रारंभ उक्त दिन प्रातः ९.३० बजे हवाईचोकसे हुआ । मंगल प्रस्थानसे पूर्व हवाईचोकमें आयोजित धर्मसभाको परम पूज्य आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज, तथा आनंदाबाबा सेवाश्रमके महंत

परम पूज्य देवप्रसादजी महाराजने सम्बोधन किया। उभय महापुरुषोंने अपने वक्तव्यमें कहा, श्री कृष्णोपदेशका पालन वर्तमान परिप्रेक्षमें सबसे ज्यादा जरुरी है। यदि हम श्री कृष्ण द्वारा प्रशस्त मार्गपर चलेंगे तो

हमारे जीवनमें प्रेमका आविर्भाव अवश्य होगा। अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा हम सभीके स्वामी हैं। हम सभीमें राष्ट्रभावना दृढ बने, हमारी संस्कृतिकी रक्षा हो यही इस शोभायात्राका ध्येय है।

आशीर्वचन पश्चात् दोनों महापुरुषोंने श्री कृष्ण प्रतिमायुक्त रथको प्रस्थान करवाया उस समय जामनगर शहरके आगेवान नागरिकोंने जैसे–जामनगरका सांसद श्री विक्रमभाई माडम, विधायक श्रीलालजीभाई सोलंकी, गुजरात प्रदेश भाजपाके मंत्री श्री रमेशभाई मुंगरा, डेप्यूटी मेयर श्रीमती रेखाबेन शर्मा आदि उपस्थित थे ।

जामनगर शहर तथा निकटवर्ती ग्रामोंसे आये हजारों भक्त समुदायसे सुशोभित यात्रा इस प्रकार प्रातः ९.३० बजे निकली और नगर परिक्रमा करती हुई मध्यान्ह १.३० बजे पुनः हवाईचोकमें पहुंची। फिर वहाँसे श्री ५ नवतनपुरी धामके प्रांगणमें पहुंचकर शोभायात्रा सम्पन्न हुई। वहाँपर परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभीको आशीर्वाद प्रदान किया।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव

दिनांक १४.०८.०९ के पवित्र दिन प्रातः ९.३० से १.३० पर्यन्त शोभायात्राका विशाल आयोजन था । रात्रि ९.०० से १२ बजे पर्यन्त विभिन्न प्रकारके रास, गरबाके साथ साथ भजन-कीर्तनोंसे मन्दिर प्रांगण गुंजायमान हुआ । श्रीकृष्ण प्राकट्योत्सव मनानेके लिए स्थानिक हजारों सुन्दरसाथके अलावा अन्य स्थानोंसे भी भक्त समुदायकी भीड लगी हुई थी । रात्रि ठीक १२.०० बजे मन्दिरका पर्दा खुलते ही सभीके **नन्द घेर आनन्द भयो, जय कन्हैया लालकी** इस नादके उद्‌घोषसे पूरे मन्दिर परिसर गुंजायमान हुआ । मन्दिरमें सर्वप्रथम प्राकट्य आरती परम पूज्य जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजने की, तत्पश्चात् संतजन एवं मन्दिरके सेवाभावी ट्रस्टीजन तथा उपस्थित सुन्दरसाथने बहुत ही भाव पूर्वक आरतीका लाभ लिया । इस प्रकार श्री कृष्ण जन्मोत्सव बहुत ही उमंग एवं उल्लासपूर्ण सम्पन्न हुआ ।

नन्दोत्सव

दूसरे दिन प्रातः ८.३० बजे पुनः रास गरबाका प्रारंभ हुआ । जैसे गोपियाँ गृहकाम छोड़कर नन्दोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिए नन्द भवनमें दौंड़ी थीं इसी प्रकार सुन्दरसाथ भी नन्दोत्सव मनानेके लिए मन्दिर प्रांगणमें

पहुंच गये। सभीने उत्साह एवं उमंग पूर्वक नन्दोत्सवका आनन्द लिया। अन्तमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने चाकलेट एवं मिठाई आदिका वधावा कर फिर मट्की फोड़ी। मटकी फूटतेही सभीने गोरस प्रसाद प्राप्त किया। ११.०० बजे मन्दिरमें आरती दर्शन, एवं भोजन प्रसाद ग्रहण कर सभी सुन्दरसाथने स्वगृह प्रस्थान किया। इस प्रकार नन्दोत्सव बहुत ही सुन्दर रूपसे सम्पन्न हुआ।

राधा अष्टमी

दिनांक २७.०८.०९ शुक्रवारके दिन श्री ५ नवतनपुरी धाममें राधा अष्टमी धूम धामपूर्वक मनाई गयी। परमधाम, व्रज तथा रासमें श्री राधाजीकी महिमा अपार है। वे इस भूतल पर अवतरित हुई उस दिनको राधा अष्टमी कहा जाता है। इस दिन कृष्णभक्तमें सर्वत्र खुशियाली दिखाई देती है। श्री ५ नवतनपुरी धाममें प्रति वर्ष राधा अष्टमीका पर्व विशेष रूपसे मनाया जाता है। इस वर्षभी यह उत्सव दिनांक २७ अगस्त २००९ के अपराह्न ३.०० से ६.०० बजे पर्यन्त विविध कार्यक्रमोके साथ सम्पन्न हुआ। प्रतिवर्ष इस दिन ऊपर लटकाई हुई मटकी फोड़नेकी लीला होती है। यह इस दिनका खास आकर्षण है। प्रतिवर्षकी भाँति इस वर्ष भी गणदेवीके सुन्दरसाथकी उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

श्री मद्भागवत कथा सम्पन्न

सुन्दरसाथजी आप सभीको विदित ही है कि निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने १४ वर्ष पर्यन्त निष्ठापूर्वक श्रीमद्भागवत कृष्ण कथामृतका रसपान किया। उनकी निष्ठासे प्रसन्न होकर अक्षरातीत श्री कृष्णजीने साक्षात् दर्शन दिया। दर्शन देकर उन्हें षोडषाक्षरी तारतम महामंत्र प्रदान कर अपनी पहिचान

कराई। इसी स्मरणको ताजा बनाये रखनेके लिए श्री ५ नवतनपुरी धाममे प्रति वर्ष भाद्र शुक्ल प्रतिपदासे भ्राद्र शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्त श्रीमद्भागवत कथाका आयोजन होता है।

उक्त तिथि अनुरूप इस वर्ष दिनांक २१ अगस्त से ०४ सितम्बर २००९ पर्यन्त श्रीमद्भागवत कथा सुन्दर रूपसे सम्पन्न हुई। इस वर्ष श्री ५ नवतनपुरी धामके ही **कथाकार श्री प्रह्लादराज शास्त्रीने** अपनी सरल एवं मधुर शैली द्वारा सुन्दरसाथको श्री कृष्ण कथाका रसपान कराया। कथाका प्रारंभ एवं पूर्णाहुति परम पूज्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजकी पावन उपस्थिति एवं आशीर्वादके द्वारा सम्पन्न हुए।

शास्त्री लक्ष्मण चैतन्य–श्री ५ नवतनपुरी धाम

साहित्य सेवा

पूर्व सिक्किम निवासी श्री J. N. Dahal द्वारा नूतन गृह प्रवेशकी खुशीमें पत्रिकाकी सेवामें रु.१००/ प्राप्त हुए हैं।

आसाम बटियामारी निवासी श्री जनकलाल आचार्यजीकी पूण्यतिथिमें कमल आचार्य तथा मोहन आचार्यजीने गोटापारायण–सत्संगका आयोजन किया। उनकी स्मृतिमें साहित्य सेवामें रुं. १०१/ प्राप्त हुए हैं।

सिंहमारी दार्जीलिङ्ग निवासी श्रीमती लीलादेवी शर्माजीका दिनांक ४.८.०९ में धामगमन हुआ। उनकी आत्मा शान्तिके लिए परिवारजनोंने पत्रिकाकी सेवामें रु. १०१/ अर्पण किये हैं।

मकवानपुर जिल्ला हेटौंडा निवासी श्री कृष्ण प्रसाद डोटेलजीका वि.सं २०६६–०५–०८ गते भाद्र शुक्ल पञ्चमी सोमवारके दिन धामगमन हुआ। उनकी आत्म शान्ति हेतु पत्रिकाकी सेवामें रु.१०१/ भेट प्रदान किया है।

पाक्की रसोईकी सेवा

०१.श्री मणिलाल जीवाभाई पटेल परिवार — बावसर
०२.श्री व्रजलाल माधभाई नारीया — कोंजा
०३.धा.वा. नवीनचंद्र मगनलाल भावसार ह. श्री राकेशभाई — सेलवास
०४.धा.वा. हंसराजभाई लींबाभाई वागडीया ह.श्री रसिकभाई — धुडशिया
०५.श्रीमती भगवतीबेन जितेन्द्रभाई वाघेला — लंडन (यु.के.)
०६.धा.वा. कुसुमबेन धीरजलाल भावसार ह.श्री नीतिनभाई भावसार — गणदेवी
०७.धा.वा. मूलजीभाई जेठाभाई, धा.वा. शांताबेन मूलजीभाई तथा धा.वा. भनुभाई मूलजीभाई गजेरा — केरीयाचाड
०८.श्री गोरधनभाई कालाभाई पानसुरीया — दावली
०९.श्री कृष्ण प्रणामी महिला मंडल — खीमपादर
१०.धा.वा. रवजीभाई लालजीभाई भंडेरी — अहमदाबाद
११.श्री ठाकरशीभाई खीमाभाई वसोया — सरसीया
१२.श्री सावित्रीबेन चौहाण — हैद्राबाद

श्री ५ नवतनपुरी धामकी ओरसे इस वर्षके वीतक कथाकार

(१) पुजारी श्री यमनाथ शास्त्रीजी–श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर (२) पं श्री अमृतराज शर्मा–श्री नवतन धाम, काठमाण्डौ (नेपाल)(३) श्री लीलाधर शास्त्री श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर (यु. एस. ए) (४) श्री श्यामसुंदर ओझा–श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, जूनागढ़ (५) श्री जनार्दन शास्त्री– बाबा दयाराम धाम, करनाल (हरियाणा) (६) श्री चन्दन शास्त्री– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, जंगलबस्ती/ छागलीझार (शुकलाई, आसाम)(७) श्री रमणराज शास्त्री–कृष्णनगर (जामनगर) (८)श्री राजेन्द्र शास्त्री– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, अहमदाबाद/आमोदरा (९) श्री प्रकाश आचार्य– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, निकोडा (१०) श्री रामेश्वर प्रणामी– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, पौडी आश्रम, सागर (म. प्र.) (११) श्री अर्जुन राज पुरी–निजानन्द गुरुकुल (जामनगर)(१२) श्री राधेश्यामजी–विभापर (जामनगर)(१३) श्री तुलसीजी– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सिनुग्रा (१४) श्री उद्धवराज शास्त्री– डालास,अमेरिका (१५) श्री नारायण शास्त्री–हिंमतनगर (सा.का.) (१६) श्री अजय प्रणामी–ठेवा (जामनगर) (१७) सुश्री भानु प्रणामी–कालावड (जामनगर) (१८) सुश्री गीता प्रणामी– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, बावसर (१९) श्री पुरुषोत्तम खतिवडा– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सिमरा (नेपाल)(२०) श्री नारायण शर्मा– श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, होक्से (नेपाल)

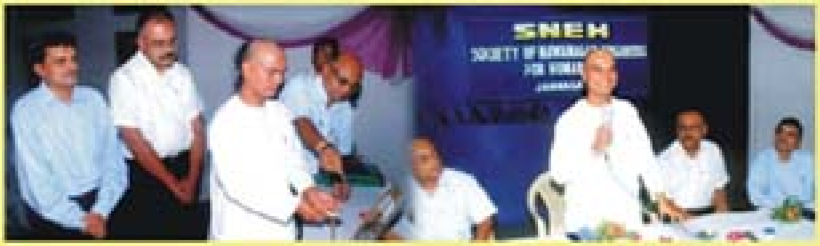

इन्जीनियर्स एसोसिएशन जामनगर द्वारा आयोजित वार्षिक कार्यक्रममें
दीप प्राकट्य एवं उद्बोधन करते हुए संत श्री सुरेन्द्रजी

श्री ५ नवतनपुरी धामकी ओरसे विभिन्न स्थानोंमें
← भेजे गये इस वर्षके वितक कथाकार

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराजकी १७वी पुण्य तिथि
पर आयोजित विविध कार्यक्रम

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित नन्दोत्सवके दृश्य

श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनाई गई राधाअष्टमीकी सुन्दर झांकी

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA

SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)